BAL BHARATI PUBLIC SCHOOL, PITAMPURA, DELHI – 110034

Class VI SUBJECT:-SANSKRIT

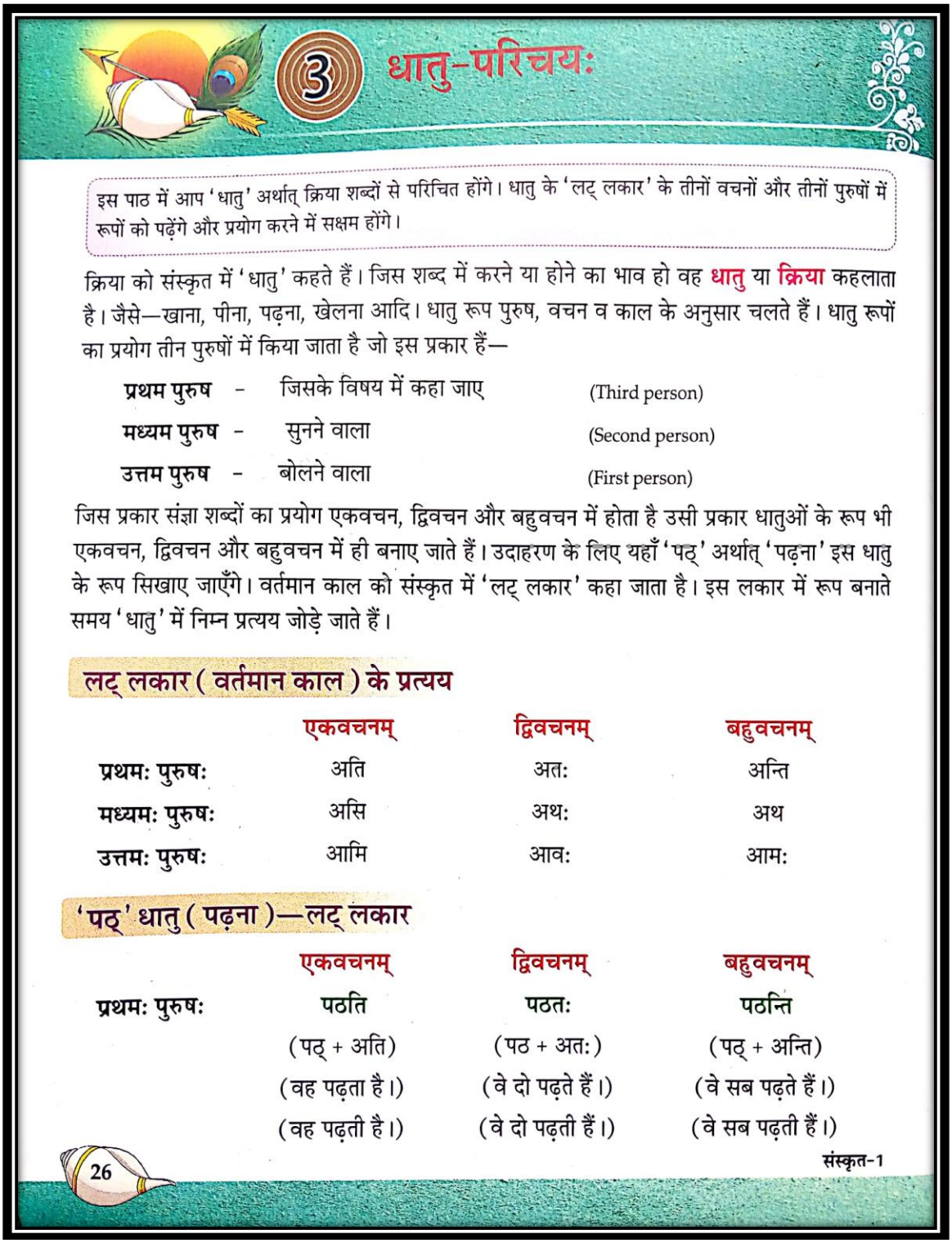

3 धातु-परिचयः

इस पाठ में आप 'धातु' अर्थात् क्रिया शब्दों से परिचित होंगे। धातु के 'लट् लकार' के तीनों वचनों और तीनों पुरुषों में रूपों को पढ़ेंगे और प्रयोग करने में सक्षम होंगे।

क्रिया को संस्कृत में 'धातु' कहते हैं। जिस शब्द में करने या होने का भाव हो वह **धातु** या **क्रिया** कहलाता है। जैसे—खाना, पीना, पढ़ना, खेलना आदि। धातु रूप पुरुष, वचन व काल के अनुसार चलते हैं। धातु रूपों का प्रयोग तीन पुरुषों में किया जाता है जो इस प्रकार हैं—

प्रथम पुरुष	–	जिसके विषय में कहा जाए	(Third person)
मध्यम पुरुष	–	सुनने वाला	(Second person)
उत्तम पुरुष	–	बोलने वाला	(First person)

जिस प्रकार संज्ञा शब्दों का प्रयोग एकवचन, द्विवचन और बहुवचन में होता है उसी प्रकार धातुओं के रूप भी एकवचन, द्विवचन और बहुवचन में ही बनाए जाते हैं। उदाहरण के लिए यहाँ 'पठ्' अर्थात् 'पढ़ना' इस धातु के रूप सिखाए जाएँगे। वर्तमान काल को संस्कृत में 'लट् लकार' कहा जाता है। इस लकार में रूप बनाते समय 'धातु' में निम्न प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

लट् लकार (वर्तमान काल) के प्रत्यय

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमः पुरुषः	अति	अतः	अन्ति
मध्यमः पुरुषः	असि	अथः	अथ
उत्तमः पुरुषः	आमि	आवः	आमः

'पठ्' धातु (पढ़ना)—लट् लकार

	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमः पुरुषः	**पठति**	**पठतः**	**पठन्ति**
	(पठ् + अति)	(पठ + अतः)	(पठ् + अन्ति)
	(वह पढ़ता है।)	(वे दो पढ़ते हैं।)	(वे सब पढ़ते हैं।)
	(वह पढ़ती है।)	(वे दो पढ़ती हैं।)	(वे सब पढ़ती हैं।)

मध्यमः पुरुषः	**पठसि**	**पठथः**	**पठथ**
	(पठ् + असि)	(पठ् + अथः)	(पठ् + अथ)
	(तुम पढ़ते हो।)	(तुम दो पढ़ते हो।)	(तुम सब पढ़ते हो।)
	(तुम पढ़ती हो।)	(तुम दो पढ़ती हो।)	(तुम सब पढ़ती हो।)
उत्तमः पुरुषः	**पठामि**	**पठावः**	**पठामः**
	(पठ् + आमि)	(पठ्+ आवः)	(पठ् + आमः)
	(मैं पढ़ता हूँ।)	(हम दो पढ़ते हैं।)	(हम सब पढ़ते हैं।)
	(मैं पढ़ती हूँ।)	(हम दो पढ़ती हैं।)	(हम सब पढ़ती हैं।)

धातुओं के प्रकार

धातुएँ दो प्रकार की होती हैं—अपरिवर्तनीय और परिवर्तनीय।

1. **अपरिवर्तनीय धातुएँ**—जो धातुएँ अपने मूल रूप में प्रयोग की जाती हैं, वे **अपरिवर्तनीय धातु** कहलाती हैं। इन धातुओं के प्रथम पुरुष—लट्लकार के रूप नीचे दिए जा रहे हैं।

BBPS,PITAM PU

धातुः - अर्थ -	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
लिख् - लिखना -	लिखति एक लिखता है।	लिखतः दो लिखते हैं।	लिखन्ति अनेक लिखते हैं।
वद् - बोलना -	वदति एक बोलता है।	वदतः दो बोलते हैं।	वदन्ति अनेक बोलते हैं।
क्रीड् - खेलना -	क्रीडति एक खेलता है।	क्रीडतः दो खेलते हैं।	क्रीडन्ति अनेक खेलते हैं।
भ्रम् - घूमना -	भ्रमति एक घूमता है।	भ्रमतः दो घूमते हैं।	भ्रमन्ति अनेक घूमते हैं।
धाव् - भागना -	धावति एक भागता है।	धावतः दो भागते हैं।	धावन्ति अनेक भागते हैं।
खाद् - खाना -	खादति एक खाता है।	खादतः दो खाते हैं।	खादन्ति अनेक खाते हैं।
नम् - नमस्कार करना -	नमति एक नमस्कार करता है।	नमतः दो नमस्कार करते हैं।	नमन्ति अनेक नमस्कार करते हैं।
चल् - चलना -	चलति एक चलता है।	चलतः दो चलते हैं।	चलन्तिः अनेक चलते हैं।

कुछ अन्य अपरिवर्तनीय धातुएँ—

धातु	-	अर्थ	धातु	-	अर्थ
रक्ष्	-	रक्षा करना	नृत्	-	नाचना
हस्	-	हँसना	पच्	-	पकाना
गर्ज्	-	गरजना	चर्	-	चरना
पत्	-	गिरना	खेल्	-	खेलना

2. **परिवर्तनीय धातुएँ**—जिन धातुओं के रूप बनाते समय उनके मूल रूप को बदल दिया जाता है, वे **परिवर्तनीय धातुएँ** कहलाती हैं। इनके प्रथम पुरुष—लट्लकार में रूप इस प्रकार बनते हैं—

धातुः	अर्थ	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
गम्	जाना	गच्छति एक जाता है।	गच्छतः दो जाते हैं।	गच्छन्ति अनेक जाते हैं।
गै (गाय्)	गाना	गायति एक गाता है।	गायतः दो गाते हैं।	गायन्ति अनेक गाते हैं।
स्था (तिष्ठ्)	बैठना	तिष्ठति एक बैठता है।	तिष्ठतः दो बैठते हैं।	तिष्ठन्ति अनेक बैठते हैं।
घ्रा (जिघ्र्)	सूँघना	जिघ्रति एक सूँघता है	जिघ्रतः दो सूँघते हैं।	जिघ्रन्ति अनेक सूँघते हैं।
दृश् (पश्य्)	देखना	पश्यति एक देखता है।	पश्यतः दो देखते हैं।	पश्यन्ति अनेक देखते हैं।
पा (पिब्)	पीना	पिबति एक पीता है	पिबतः दो पीते हैं।	पिबन्ति अनेक पीते हैं।
दा (यच्छ्)	देना	यच्छति एक देता है	यच्छतः दो देते हैं।	यच्छन्ति अनेक देते हैं।
तॄ (तर्)	तैरना	तरति एक तैरता है।	तरतः दो तैरते हैं।	तरन्ति अनेक तैरते हैं।

कुछ अन्य परिवर्तनीय धातुएँ—

धातु	-	अर्थ	धातु	-	अर्थ
नी (नय्)	-	ले जाना	कृ (कर्)	-	करना
स्मृ (स्मर्)	-	चुराना	प्रच्छ् (पृच्छ्)	-	पूछना
भू (भव्)	-	होना	कृष् (कर्ष्)	-	खींचना

अभ्यासः

1. **रिक्तस्थानानि पूरयत। (रिक्त स्थान पूरे कीजिए।)**

Fill in the blanks.

(क) क्रिया को संस्कृत में .... कहते हैं।

(ख) धातु रूपों का प्रयोग .... पुरुषों में किया जाता है।

(ग) वर्तमान काल को .... लकार कहा जाता है।

(घ) धातुएँ .... प्रकार की होती हैं।

(ङ) जो धातुएँ मूल रूप में प्रयोग की जाती हैं उन्हें .... धातुएँ कहा जाता है।

BBPS,PITA

2. धातुभिः सह तेषां हिन्दी-अर्थं मेलयत। (धातुओं के साथ उनके हिन्दी अर्थों को मिलाइए।)

Match the roots with their Hindi meaning.

	धातु	अर्थ
(क)	पच्	चुराना
(ख)	गम्	चरना
(ग)	चर्	पूछना
(घ)	नृत्	पकाना
(ङ)	हृ	जाना
(च)	प्रच्छ्	नाचना

3. क्रियापदानि वचनानुसारं लिखत। (क्रियापदों को वचनों के अनुसार लिखिए।)

Write the form of verbs according to the numbers.

स्मरतः, भवन्ति, नयति, यच्छतः, तरति, नमन्ति, भ्रमतः, खादन्ति, कुरुतः, वदति, पतति, नृत्यन्ति

एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....

4. धातुरूपाणि पूरयत। (धातुरूपों को पूरा कीजिए।)

Complete the form of verbs.

(क)	क्रीडति	.....	.....
(ख)	.....	.....	चरन्ति
(ग)	.....	गर्जतः	.....
(घ)	रक्षति	.....	.....
(ङ)	.....	.....	यच्छन्ति
(च)	.....	कुरुतः	.....
(छ)	जिघ्रति	.....	.....
(ज)	.....	.....	कथयन्ति

5. निर्देशानुसारं धातूनाम् उचितं रूपं लिखत। (निर्देशानुसार धातुओं के उचित रूप लिखिए।)
Write the correct form of roots according to the instructions.

(क) 'हस्' — प्रथमः पुरुषः बहुवचने .....

(ख) 'कृ' धातु — मध्यमः पुरुषः द्विवचने .....

(ग) 'नम्' धातु — उत्तमः पुरुषः एकवचने .....

(घ) 'कथ्' धातु — मध्यमः पुरुषः एकवचने .....

(ङ) 'पा' धातु — प्रथमः पुरुषः बहुवचने .....

6. अधोलिखितानि वाक्यानि उचितक्रियापदैः पूरयत। (नीचे लिखे वाक्यों को उचित क्रियापदों से पूरा कीजिए।)
Make suitable form of verbs and fill in the blanks..

(क) अश्वाः ..... । (भ्रम्)

(ख) नरौ ..... । (खाद्)

(ग) आम्रम् ..... । (पत्)

(घ) कन्याः ..... । (नृत्)

(ङ) वानरः ..... । (कूर्द्)

(च) नेत्रे ..... । (दृश्)

BBPS,PIT